

इस मक़ाम पर दफ़्न बीबी रुक़य्या (अ.स.) की शहादत का खुलासा

यह पाक और मासूम बच्ची, बीबी रुक़य्या (अ.स.), जो इस रौज़े में आराम फरमा रही हैं, महज़ चार साल की थीं जब सन 61 हिजरी / 680 ईस्वी में उन्हें शहादत नसीब हुई। उनकी वक़्त से पहले मौत उस दौर के ज़ालिम हुक्मरानों के हाथों हुए ग़ैर-इंसानी सुलूक का नतीजा थी, जिन्होंने जोर-ज़बरदस्ती से हुक्मत कायम कर रखी थी।

बीबी रुक़य्या (अ.स.) रसूल-ए-ख़ुदा हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.व.) की सीधी नस्ल से थीं। वह इमाम अल-हुसैन (अ.स.) की चार बेटियों में सबसे छोटी थीं। इमाम अल-हुसैन (अ.स.) नबी-ए-अकरम (स.अ.व.व.) के नवासे और शियाओं के मुताबिक़ मुसलमानों के तीसरे इमाम थे। बीबी रुक़य्या (अ.स.) यज़ीद बिन मुआविया के दौर में ज़िंदा थीं, जो अपने अख़लाकी पतन, बदचलनी, बेईमानी, गुनाहों भरी ज़िंदगी और जुल्म-ओ-जबर के लिए बदनाम था। वह उन बुलंद किरदार लोगों से दुश्मनी रखता था जो उसके गुनाहों, जुल्म और नाइंसाफी को खुलकर नकारते थे। वह ऐसे लोगों को बेरहमी से सताने और मिटा देने की कोशिश करता था।

अपनी हुक्मत के शुरूआती दिनों से ही यज़ीद जानता था कि इमाम अल-हुसैन (अ.स.) ही रसूल-ए-ख़ुदा (स.अ.व.व.) द्वारा बताए गए हक़दार खलीफ़ा हैं। इसी वजह से उसका सबसे बड़ा मक़सद इमाम अल-हुसैन (अ.स.) को रास्ते से हटाना था। इमाम अल-हुसैन (अ.स.) के लिए यह बिल्कुल वाज़ेह था कि यज़ीद एक बे-दीन, अख़लाक़ से ख़ाली और इलाही पैग़ामों का इनकार करने वाला शख्स है। इसी वजह से इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके कुछ वफ़ादार साथियों ने इज्ज़त और शराफ़त के साथ यज़ीद की नाजायज़ हुक्मत को मानने से इनकार कर दिया।

मक्का में इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके साथियों को बहुत सताया गया, जिसके बाद उन्हें मजबूरन इराक़ के दूर दराज़ इलाक़े कर्बला की तरफ़ जाना पड़ा। वहीं 10 मुहर्रम, 61 हिजरी / 680 ईस्वी को, तीन दिन की सख़्त घेराबंदी, भयानक हालात और तपते रेगिस्तान में पानी से पूरी तरह महरूम रहने के बाद, इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके 72 वफ़ादार साथियों को यज़ीद की तक्ररीबन 30 हज़ार हथियारबंद फौज से लड़ने पर मजबूर किया गया। हालाँकि इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके साथी तादाद में बहुत कम थे, फिर भी यह जंग पूरे दिन चलती रही और आखिरकार इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके तमाम साथी शहीद हो गए। उन्होंने अपनी जानें क़र्बान करके नेकी, इसाफ़ और हक़ के अबदी उसूलों को ज़िंदा रखा और यज़ीद की असल नियत को दुनिया के सामने बेनकाब कर दिया—कि वह इस्लाम के इलाही नूर को बुझाना चाहता था। हर एक शहीद ने यज़ीद के कई सिपाहियों को जहन्नम वासिल किया।

इन शहीदों की रूहानी बुलंदी ऐसी थी कि भारत के अज़ीम रहनुमा महात्मा गांधी ने कहा: “अगर मेरे पास ऐसे लोग होते, तो मैं भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को जुल्म से आज़ाद करा सकता था। मैंने जुल्म के खिलाफ़ जंग करना इमाम हुसैन (अ.स.) के मदरसे से सीखा।” इसके बाद यज़ीद के सिपाहियों ने बेरहमी से शहीदों के सर काटकर उन्हें नेज़ों पर चढ़ाया और इमाम अल-हुसैन (अ.स.) के साथ मौजूद औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया। इनमें बीबी ज़ैनब (अ.स.)—इमाम अल-हुसैन (अ.स.) की बहन—और बीबी रुक़य्या (अ.स.), उनकी चार साल की मासूम बेटी भी शामिल थीं। बेवा और यतीम बच्चियों को इराक़ से दमिश्क तक बेरहमी से ले जाया गया।

दमिश्क पहुँचने पर क़ैदी औरतों को लोहे की जंजीरों में जकड़कर पैदल चलाया गया। रोने पर उन्हें कोड़े मारे जाते। इसी दौरान बीबी रुक़य्या (अ.स.) अपने वालिद को याद करके रोने लगीं। उन्हें यह कहकर चुप कराया जाता था कि उनके वालिद सफ़र पर गए हैं। मगर जब उन्होंने ख़्वाब में अपने वालिद को देखा और जोर देकर उनसे मिलने की ज़िद की, तो यज़ीद ने बेरहमी से उनके वालिद का कटा हुआ सर उनके सामने पेश कर दिया। उस भयानक मंज़र को देखकर वह मासूम बच्ची बेहोश होकर अपने वालिद के सर से लिपट गईं। उनका नन्हा दिल रुक गया और उन्होंने वहीं शहादत पाई। उन्हें यहीं इस मक़ाम पर दफ़्न किया गया।

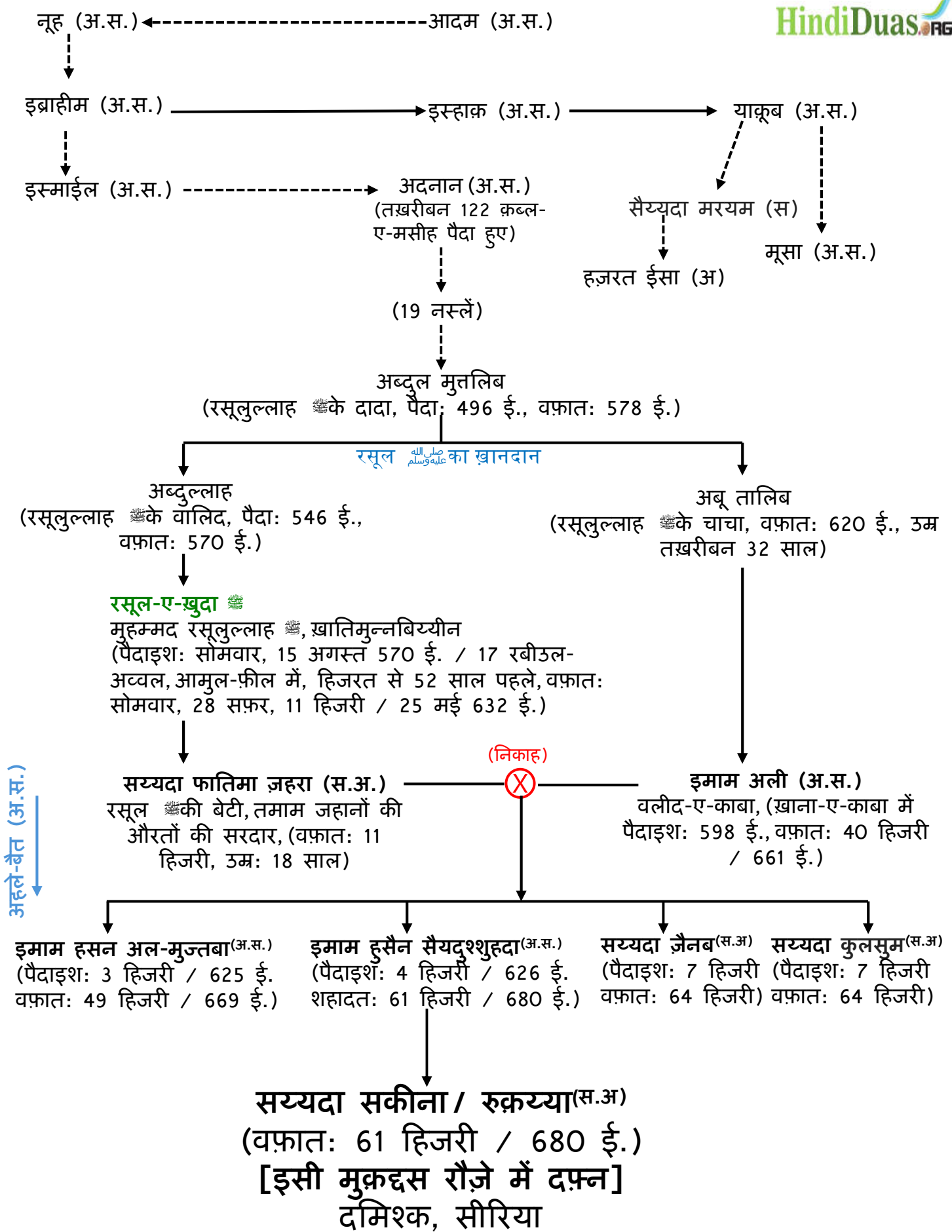
सन 1280 हिजरी / 1863 ईस्वी में बीबी रुक़य्या (अ.स.) की पुरानी क़ब्र फट गई और उनका पाक जिस्म ज़ाहिर हुआ। देखा गया कि उनका जिस्म ताज़ा, नरम और सलामत था, जैसे अभी-अभी दफ़न किया गया हो—हालाँकि 1200 साल से ज़्यादा गुज़र चुके थे। इस करामात का गवाह उस वक़्त दमिश्क का तुर्क गवर्नर, काज़ी-उल-कुज़ात और कई बड़े लोग थे। यह वाक़िआ तारीख़ की किताबों में दर्ज है।

दुनिया भर से, खासकर शिया मुसलमान, यहाँ ज़ियारत के लिए आते हैं, उनके ग़म में शरीक होते हैं और ज़िंदगी भर जुल्म के खिलाफ़ लड़ने का अहद ताज़ा करते हैं। नबी-ए-अकरम (स.अ.व.व.) और इमाम अल-हुसैन (अ.स.) के अल्लाह के नज़दीक बुलंद मक़ाम को जानकर, लोग बीबी रुक़य्या (अ.स.) को वसीला बनाकर अल्लाह से दुआ करते हैं।

अल्लाह बीबी रुक़य्या (अ.स.) और उनके तमाम मोहब्बत करने वाले ज़ायरीन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए।

बीबी रुक़य्या (अ.स.) का पुराना छोटा रौज़ा तक्ररीबन 10×10 मीटर का था, जिसे 1985 में तामीर करके वुसअत दी गई।

जनाब सकीना/रुक़य्या (स:अ) का शजरा अगले पेज पर है



→ डायरेक्ट नसल
-----→ ग़ैर डायरेक्ट नसल